

श्री महाकाल लोक गलियारा

प्रलम्बिस के लयि:

श्री महाकाल लोक गलियारा, उज्जैन का महाकाल मंदरि, काशी वशिषनाथ कॉरडोर, मंदरि वासुतुकला ।

मेन्स के लयि:

भारत की मंदरि वासुतुकला, श्री महाकाल लोक गलियारा और इसका महत्त्व ।

चर्चा में क्यों?

हाल ही में प्रधानमंत्री ने मध्य प्रदेश के उज्जैन में 'श्री महाकाल लोक' गलियारा/कॉरडोर के पहले चरण का उद्घाटन कयि ।

- वाराणसी में वशिषनाथ मंदरि और उत्तराखंड में केदारनाथ मंदरि के बाद महाकाल मंदरि का वकिस इस कड़ी में तीसरा 'ज्योतरिलगि' स्थल है ।
- 800 करोड रुपए की लागत से बनने वाला महाकाल कॉरडोर, [काशी वशिषनाथ कॉरडोर](#) से चार गुना बडा है ।

श्री महाकाल लोक कॉरडोर/गलियारा

परचिय:

- महाकाल महाराज मंदरि परसिर वसितार योजना उज्जैन ज़िले में महाकालेश्वर मंदरि और उसके आसपास के क्षेत्र के वसितार, सौंदर्यीकरण एवं भीडभाड को कम करने की एक योजना है ।
- योजना के तहत लगभग 2.82 हेक्टेयर के महाकालेश्वर मंदरि परसिर कोबढाकर 47 हेक्टेयर कयि जा रहा है, जसि उज्जैन ज़िला प्रशासन द्वारा दो चरणों में वकिसति कयि जाएगा ।
 - इसमें 17 हेक्टेयर की रुदरसागर झील शामिल होगी ।
- इस परयोजना से शहर में वार्षिक रूप से ग्राहकों की संख्या मौजूदा 1.50 करोड से बढकर लगभग तीन करोड होने की उम्मीद है ।

पहला चरण:

- वसितार योजना के पहले चरण के पहलुओं में से एक आंगंतुक प्लाज़ा है जसिमेंदो प्रवेश द्वार या द्वार हैं अर्थात् नंदी द्वार और पनाकी द्वार ।
 - आंगंतुक प्लाज़ा में एक बार में 20,000 तीर्थयात्री ठहर सकते हैं ।
- शहर में आंगंतुकों के प्रवेश और मंदरि तक उनकी आवाजाही को ध्यान में रखते हुएभीडभाड को कम करने के लयि एक संचलन योजना भी वकिसति की गई है ।
- एक 900 मीटर पैदल यात्री गलियारे का नरिमाण कयि गया है, जो प्लाज़ा को महाकाल मंदरि से जोडता है, जसिमेंशवि वविह, तरपुरासुर वध, शवि पुराण और शवि तांडव स्वरूप जैसे भगवान शवि से संबंधति कहानयिों को दर्शाते 108 भक्तिचित्रि एवं 93 मूर्तयिों हैं ।
 - इस पैदल यात्री गलियारे के साथ 128 सुवधि केंद्र, भोजनालय और शॉपिंग जॉइंट, फूलवाला, हस्तशिल्प स्टोर आदि भी हैं ।

दूसरा चरण:

- इसमें मंदरि के पूरवी और उत्तरी मोर्चों का वसितार शामिल है ।
 - इसमें उज्जैन शहर के वभिन्न क्षेत्रों का वकिस भी शामिल है, जैसेमहाराजवाडा, महल गेट, हरफाटक बरजि, रामघाट अग्रभाग और बेगम बाग रोड ।
 - महाराजवाडा में भवनों का पुनर्वकिस कर महाकाल मंदरि परसिर से जोडा जाएगा, जबकिएक वरिसत धर्मशाला और कुंभ संग्रहालय बनाया जाएगा ।
- दूसरे चरण को सटि इनवेस्टमेंट्स टू इनोवेट, इंटीग्रेट एंड सस्टेन (CITIIS) प्रोग्राम के तहत एजेंस फ्रैन्काइज़ डी डेवलपमेंट (AFD) से फंडगि के साथ वकिसति कयि जा रहा है ।

श्री महाकाल लोक कॉरडोर का महत्त्व:

- अपार सांस्कृतिक मान्यताएँ: माना जाता है कि मंदिर महाकालेश्वर द्वारा शासित है, जिसका अर्थ है 'समय के भगवान' यानी भगवान शिव। हद्वि पौराणिक कथाओं के अनुसार, मंदिर का निर्माण भगवान ब्रह्मा द्वारा किया गया था और वर्तमान में यह पवतिर कृष्णिरा नदी के किनारे स्थित है।
- दक्षिण की ओर मुख वाला ज्योतिरलिगि: उज्जैन में महाकालेश्वर ज्योतिरलिगि शिव के सबसे पवतिर नविस माने जाने वाले 12 ज्योतिरलिगिों में से एक है। यह मंदिर भारत में 18 महा शक्तिपीठों में से एक के रूप में प्रतषिठित है।
 - यह दक्षिण की ओर मुख वाला एकमात्र ज्योतिरलिगि है, जबकि अन्य सभी का मुख पूर्व की ओर है। ऐसा इसलिये है क्योंकि मृत्यु की दशा दक्षिण मानी जाती है।
 - दरअसल, अकाल मृत्यु से बचने के लिये लोग महाकालेश्वर की पूजा करते हैं।
 - पुराणों के अनुसार, भगवान शिव ने प्रकाश के एक अंतहीन सतंभ के रूप में विश्व को वेधति कथिया, जिसे ज्योतिरलिगि कहा जाता है।
 - महाकाल के अलावा इनमें गुजरात में सोमनाथ और नागेश्वर, आंध्र प्रदेश में मल्लिकार्जुन, मध्य प्रदेश में ओंकारेश्वर, उत्तराखंड में केदारनाथ, महाराष्ट्र में भीमाशंकर, त्र्यंबकेश्वर और घृष्णेश्वर मंदिर, वाराणसी में विश्वनाथ, झारखंड में बैद्यनाथ और तमलिनाडु में रामेश्वरम शामिल हैं।
- प्राचीन ग्रंथों में उल्लेख: महाकाल मंदिर का उल्लेख कई प्राचीन भारतीय काव्य ग्रंथों में मलिता है। चौथी शताब्दी में रचित मेघदूतम (पूर्व मेघ) के प्रारंभिक भाग में कालिदास महाकाल मंदिर का वविरण देते हैं।
 - इसका वर्णन पत्थर की नींव के साथ लकड़ी के खंभों पर बने छत के ऊपर शखिर वाले मंदिर के रूप में मलिता है। गुप्त काल से पूर्व मंदिरों पर कोई शखिर या शीर्ष नहीं होता था।
- मंदिर का वनिश और पुनरनिमाण: मध्यकाल में इस्लामी शासक यहाँ पूजा करने वाले पुजारियों को दान देते थे।
 - 13वीं शताब्दी में उज्जैन पर अपने आक्रमण के दौरान तुर्क शासक शम्स-उद-दीन इल्तुतमशि द्वारा मंदिर परिसर को नष्ट कर दिया गया था।
 - वर्तमान पाँच मंजलि संरचना का निर्माण 1734 में मराठा सेनापति रानोजी शिदि द्वारा मंदिर वास्तुकला की भूमजि, चालुक्य और मराठा शैलियों में कथिया गया था।

उज्जैन शहर का ऐतहासिक महत्त्व:

- उज्जैन शहर हद्वि धर्मग्रंथों की शक्ति के प्राथमिक केंद्रों में से एक था, जिसे छठी और सातवीं शताब्दी ईसा पूर्व में अवंतिका कहा जाता था।
- बाद में ब्रह्मगुप्त और भास्कराचार्य जैसे खगोलविद एवं गणतिज्ज उज्जैन में बस गए।
 - 18वीं शताब्दी में महाराजा जय सहि द्वितीय द्वारा यहाँ एक वेधशाला का निर्माण कथिया गया था, जिसे वेद शाला या जंतर मंतर के रूप में जाना जाता है, जिसमें खगोलीय घटनाओं को मापने के लिये 13 वास्तुशलिप उपकरण शामिल हैं।
- इसके अलावा चौथी शताब्दी में प्रतषिठित सूर्य सदिधांत, जो भारतीय खगोल वज्जिान पर उपलब्ध ग्रंथों में से एक है, के अनुसार उज्जैन भौगोलिक रूप से एक ऐसे स्थान पर स्थित है, जहाँ देशांतर रेखा को शून्य मध्याह्न और कर्क रेखा काटती है।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा वगित वर्षों के प्रश्न

प्रश्न. मुरैना के पास स्थित चौसठ योगिनी मंदिर के संदर्भ में, नमिनलखिति कथनों पर वचिर कीजयि: (2021)

1. यह कच्छपघात राजवंश के शासनकाल के दौरान बनाया गया एक गोलाकार मंदिर है।
2. यह भारत में निर्मित एकमात्र गोलाकार मंदिर है।
3. यह कषेत्र में वैष्णव पंथ को बढ़ावा देने के लिये था।
4. इसके डिज़ाइन ने एक लोकप्रिय धारणा को जन्म दिया है कि भारतीय संसद भवन के पीछे इसकी प्रेरणा थी।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 1 और 4
- (d) केवल 2, 3 और 4

उत्तर: C

व्याख्या:

- चौसठ योगिनी मंदिर ग्वालियर से 40 किलोमीटर दूर मुरैना ज़िले में पटौली के पास मतिौली गाँव में स्थित है। भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण ने मंदिर को प्राचीन और ऐतहासिक स्मारक घोषित कथिया है।
- 1323 ईस्वी के एक शिलालेख के अनुसार, मंदिर का निर्माण कच्छपघात राजा देवपाल (शासनकाल वर्ष 1055-1075) द्वारा कथिया गया था। ऐसा कहा जाता है कि यह मंदिर सूर्य के गोचर के आधार पर ज्योतिषि एवं गणति की शक्ति प्रदान करने का स्थान था। अतः कथन 1 सही है।
- चौसठ योगिनी मंदिर को इकत्तरसो महादेव मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। लगभग सौ फीट ऊँची एक अलग पहाड़ी पर स्थित इस गोलाकार मंदिर

से नीचे खेतों का शानदार दृश्य देखा जा सकता है और यह भारत के बहुत कम ऐसे मंदिरों में से एक है। इस मंदिर का नाम इसकी कोशिकाओं के अंदर शिव लिंगों के कारण रखा गया है। यह चौंसठ योगनियों को समर्पित एक योगिनी मंदिर है। **अतः कथन 2 और 3 सही नहीं हैं।**

- यह बाहरी रूप से गोलाकार है, इसकी त्रिज्या 170 फीट की है और इसके आंतरिक भाग के भीतर 64 छोटे-छोटे कक्ष हैं। मुख्य केंद्रीय मंदिर के भीतर स्लैब कवरिंग है जिनमें वर्षा जल को बड़े भूमिगत भंडारण में ले जाने के लिये छदिर हैं। बारिश के पानी को स्टोरेज तक ले जाने वाली पाइप लाइनें भी देखी जा सकती हैं।
- कई जजिजासु पर्यटकों ने इस मंदिर की तुलना भारतीय संसद भवन से की है क्योंकि शैली में दोनों ही गोलाकार हैं। कई लोगों का यह भी मानना है कि यह मंदिर संसद भवन की प्रेरणा था। **अतः कथन 4 सही है।**

अतः विकल्प C सही उत्तर है।

प्रश्न. शैलकृत स्थापत्य प्रारंभिक भारतीय कला एवं इतिहास के ज्ञान के अति महत्वपूर्ण स्रोतों में से एक का प्रतिनिधित्व करता है। विचिना कीजिये। (मैन्स-2020)

मंदिर वास्तुकला: नागर शैली

स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/shri-mahakal-lok-corridor>

